B.A (P) VI Sem हिन्दी सिनेमा और उसका अध्ययन (62055634)

III year

सिनेमा बीसवीं सदी में मानव जाति को मिले एक बेशकीमती वैज्ञानिक उपहारों में से एक है। इसने विश्व के मनोरंजन के क्षेत्र में एक क्रांति ला दी है। सिनेमा का जन्म सिर्फ मनोरंजन ~~तक सीमित~~ परोसकर पैसे कमाने के लिए नहीं हुआ है। हमेशा से सिनेमा के मजबूत कंधो पर देश-काल और सामाजिक दायित्व का दोहरा बोझ भी हुआ करता है। अपने आरम्भिक काल से ही सिनेमा दर्शकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। आज समाज और सिनेमा परस्पर एक-दूसरे के पूरक है या नहीं यह एक विरोधाभास से भरा हुआ विषय है। सिनेमा के आरम्भिक काल की स्थिति काफी हद तक यद्यपि ऐसी नहीं थी क्योंकि उस समय बनी फिल्मों का एक सामाजिक चरित्र था। उन्हें पता था कि इस माध्यम का असर करोड़ो लोगों पर पड़ता है। लोग अपने जीवन के रहन-सहन के साथ-साथ विचारों से भी सिनेमा का अनुकरण करते हैं क्योंकि फिल्म एक ऐसा सामाजिक प्रॉडक्ट है जिससे दर्शकों का गहरा जुड़ाव होता है।

समाज को सिनेमा के माध्यम से बदलने की प्रतिबद्धता लेकर कई कलाकारों ने इस दिशा में अपने कदम बढ़ाए थे और उनमें अद्भुत कला क्षमता भी थी लेकिन पैसे और शोहरत की चकाचौंध ने समाज के प्रति उनकी निष्ठा और दायित्व को ~~मुक्त~~ समाप्तकर दिया। आज भी ~~हमारे मध्य~~ सिनेमा के क्षेत्र में ऐसे कई फिल्मकार हैं जिनकी सोच, तकनीकी क्षमता और प्रस्तुतिकरण की शैली में वह ताकत है जो समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सकती है। एक ~~समय~~ जमाने में बी. आर चोपड़ा, यश चोपड़ा ने कानून, धर्मपुत्र, धूल का फूल, वक्त जैसी फिल्में बनायी जो रूढ़िवादी संस्कारों को तोड़ने के लिए कारगर साबित हुई लेकिन बाद के वर्षों में ऐसे फिल्मकार भी कई दबावों के चलते घिसेपिटे फार्मूले की फिल्मे बनाते रहे। फिल्मो का बॉक्स ऑफिस पर हिट होना ही आज सिनेमा की कसौटी बन गया है।

... कुछ विद्वानों के अनुसार भाषा संरचना

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner